803

Total Pages : 3 **Roll No. ----------**

PJ-101

खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरंभिक गणित
फलित ज्योतिष में डिप्लोमा/प्रमाणपत्र
(डी0पी0जे0/सी0पी0जे0–12/16/17)
सत्र 2021 (Winter)

समयः 2 घण्टा **पूर्णांकः 100**

नोट : यह प्रश्न पत्र सौ (100) अंकों का है जो दो (02) खण्डों, क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड –क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए छब्बीस (26) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल दो (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [2 x 26 = 52]

प्र0–1 काल की परिभाषा का आकलन करते हुए स्थूल एवं सूक्ष्म काल पर प्रकाश डालें।

P.T.O.

प्र0–2 राशि चक्र में नक्षत्रों के उदभव का विस्तृत रूप से उल्लेख करते हुए सामान्य जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव पर प्रकाश डालें।

प्र0–3 स्वकल्पित उदाहरण द्वारा सूर्य स्पष्ट करें।

प्र0–4 विंशोत्तरी दशा का परिचय देते हुए सूर्य ग्रह की दशा साधन करके चक्र द्वारा प्रदर्शित करें।

प्र0–5 द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश का उल्लेख करते हुए विस्तृत विवेचन करें।

खण्ड – ख

लघु उत्तरों वाले प्रश्न

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए बारह (12) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल चार (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। [4 x 12 = 48]

प्र0–1 पांचाग किसे कहते हैं? उल्लेख करें।

प्र0–2 खगोल शास्त्र की समय रूपान्तरण की भूमिका पर प्रकाश डालें।

P.T.O.

प्र0–3 सूर्य, चन्द्र ग्रहों की अन्तर्दशा साधन करें? स्वकल्पित उदाहरण के साथ उल्लेख करें।

प्र0–4 स्वकल्पित उदाहरण लेकर सप्तमांश विधि का उल्लेख करते हुए चक्र प्रदर्शित करें।

प्र0–5 इष्टकाल किसे कहते हैं? ग्रह स्पष्टीकरण में इष्टकाल की आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

प्र0–6 अश्वनी आर्द्रा, पुष्य नक्षत्रों में उत्पन्न जातकों के विषय में उल्लेख करें।

प्र0–7 भयात–भयोग का उल्लेख करते हुए आवश्यकता पर प्रकाश डालें।

प्र0–8 ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता पर प्रकाश डालें।

————————————